1. महाराजाधिराज समुद्रगुप्त

(सन् 335 से सन् 375 तक शासन)

समुद्रगुप्त

राजा अशोक के लगभग 500 वर्षों बाद मगध में एक और बड़ा राजा हुआ। उसका नाम था समुद्रगुप्त। अशोक की तरह समुद्रगुप्त की राजधानी भी पाटलिपुत्र ही थी। मानचित्र - 2 में पाटलिपुत्र नगर पहचानो।

समुद्रगुप्त का सिक्का

समुद्रगुप्त द्वारा जारी किए गए सिक्कों में एक सिक्के का चित्र यहां देखो। इस सिक्के में राजा समुद्रगुप्त को वीणा बजाते दिखाया है। समुद्रगुप्त को संगीत में रुचि थी। उसके दरबार में अच्छे से अच्छे कवि और कलाकार हुआ करते थे। समुद्रगुप्त के बारे में जितनी ये बातें प्रसिद्ध हैं उतनी ही प्रसिद्ध हैं उसकी युद्ध विजय की बातें।

कवि हरिषेण

महाराजा समुद्रगुप्त ने किन राजाओं को युद्ध में हराया और उन राजाओं के साथ कैसा व्यवहार किया, यह पूरा वर्णन हमें हरिषेण देता है। हरिषेण समुद्रगुप्त के दरबार का एक अधिकारी और कवि था। उसने समुद्रगुप्त की प्रशंसा में एक लम्बी प्रशस्ति संस्कृत भाषा में लिखी।

इलाहाबाद का खम्भा

हरिषेण की लिखी गई प्रशस्ति एक लम्बे पत्थर के खम्भे पर खुदवाई गई। यह वह खम्भा था जिसके ऊपर राजा अशोक का संदेश भी खुदा हुआ था। यह खम्भा आजकल इलाहाबाद के किले में रखा हुआ है। इस तरह, इलाहाबाद के इस खम्भे से हमें दो बड़े राजाओं का परिचय मिलता है।

ऊपर दिए अंशों के 8 महत्वपूर्ण शब्दों को रेखांकित करो।

सन् 335 में समुद्रगुप्त राजा बना था। तब उसका राज्य बहुत छोटा था। आसपास बहुत सारे अन्य छोटे बड़े राज्य थे। इतने सारे राजाओं के बीच समुद्रगुप्त अपने मगध राज्य को मज़बूत बनाना चाहता था और अपना यश बढ़ाना चाहता था। इसके लिए उसने क्या प्रयत्न किया यह इलाहाबाद के खम्भे पर खुदा है।

आर्यावर्त के राज्य

प्रशस्ति में लिखा है-

"समुद्रगुप्त ने अपने अपार बाहुबल से आर्यावर्त के अनेक राजाओं को खत्म करके उनके राज्य को अपने राज्य में मिला लिया। ऐसे राजा थे - रुद्रदेव, मटिल, नागदत्त, चन्द्रवर्मन, गणपतिनाग, नागसेन, अच्युतनन्दिन और बलवर्म"

इन विजयों के कारण समुद्रगुप्त का राज्य आर्यावर्त में फैल गया। उन दिनों गंगा-यमुना नदियों के मैदान को आर्यावर्त कहा करते थे क्योंकि उस क्षेत्र में आर्य कबीले आकर बसे थे।

समुद्रगुप्त ने आर्यावर्त के कितने राजाओं को हराया?

उन्हें हराकर क्या किया?

आर्यावर्त का क्षेत्र मानचित्र-2 में पहचानो।

इलाहाबाद के खंभे पर हरिषेण की लिखी प्रशस्ति

खम्भे की लिखाई पर ध्यान दो। क्या कोई अक्षर तुम्हारी पहचान का है?

इसमें संस्कृत भाषा में बातें लिखी हैं।

क्या आज भी संस्कृत इस लिखावट (लिपि) में लिखी जाती है?

दक्षिणापथ के राज्य

आर्यावर्त में सफल होने के बाद समुद्रगुप्त दक्षिण दिशा की ओर मुड़ा। नर्मदा नदी के दक्षिण में पड़ने वाला क्षेत्र उन दिनों दक्षिणापथ कहलाता था। तब क्या हुआ यह हरिषेण की लिखी प्रशस्ति के एक अंश मे पढ़ो। (गुरुजी यह अंश पढ़ कर सुनाएंगे। तुम मानचित्र-2 में उन जगहों को ढूंढते जाओ जिनका नाम इस अंश में आएगा)

"समुद्रगुप्त पराक्रमी होने के साथ-साथ उदार भी है। इस कारण उसने सारे दक्षिणापथ के राजाओं को युद्ध में हराकर उनके राज्य उन्हें लौटा दिए। ये दक्षिणापथ के राजा हैं - कोसल के राजा महेन्द्र, महाकान्तार के राजा व्याघराज, कुराल के राजा मण्टराज, पिष्टपुर के राजा महेन्द्रगिरि, कोट्टूर के राजा स्वामिदत्त, एरण्डपल्ल के राजा दमन, कांचीपुरम के राजा विष्णुगोप, अवमुक्त के राजा नीलराज, वेंगी के राजा हस्तिवर्मन, पालक्क के राजा उग्रसेन, देवराष्ट्र के राजा कुबेर और कुस्थलपुर के राजा धनंजय।"

इन विजयों के बाद दक्षिणापथ में भी समुद्रगुप्त से टक्कर लेने वाला कोई न बचा। समुद्रगुप्त सब राजाओं का राजा हो गया।

समुद्रगुप्त ने दक्षिणापथ के कितने राजाओं को हराया? गिनकर बताओ।

मौर्य राजाओं के समय में दक्षिणापथ

समुद्रगुप्त से 500 साल पहले मौर्य वंश के राजा भी इतनी दूर दक्षिण में राज्य बनाने आए थे (चन्द्रगुप्त, बिन्दुसार व अशोक), पर मौर्य वंश के राजाओं ने दक्षिणापथ क्षेत्र में इतने सारे राजाओं से लड़ाई नहीं की थी। उन दिनों, दक्षिणापथ में इतने सारे राजा थे ही नहीं। मौर्य वंश के राजा जब दक्षिणापथ आए तब वहां जो गांव और बस्तियां थीं उन पर वे अपने सैनिक और अधिकारी तैनात कर गए थे। पर, मौर्य राजाओं के 500 साल बाद, जब समुद्रगुप्त दक्षिणापथ में राज्य बनाने आया तो उसे इस इलाके में कितने राजाओं से युद्ध करना पड़ा!

समुद्रगुप्त ने दक्षिणापथ के राजाओं को हरा कर उनके साथ क्या नीति अपनाई? समुद्रगुप्त ने आर्यावर्त के राजाओं के साथ क्या यही नीति अपनाई थी? स्पष्ट करो।

दक्षिणापथ में समुद्रगुप्त की नीति मौर्य राजाओं की नीति से कैसे फर्क थी? स्पष्ट करो।

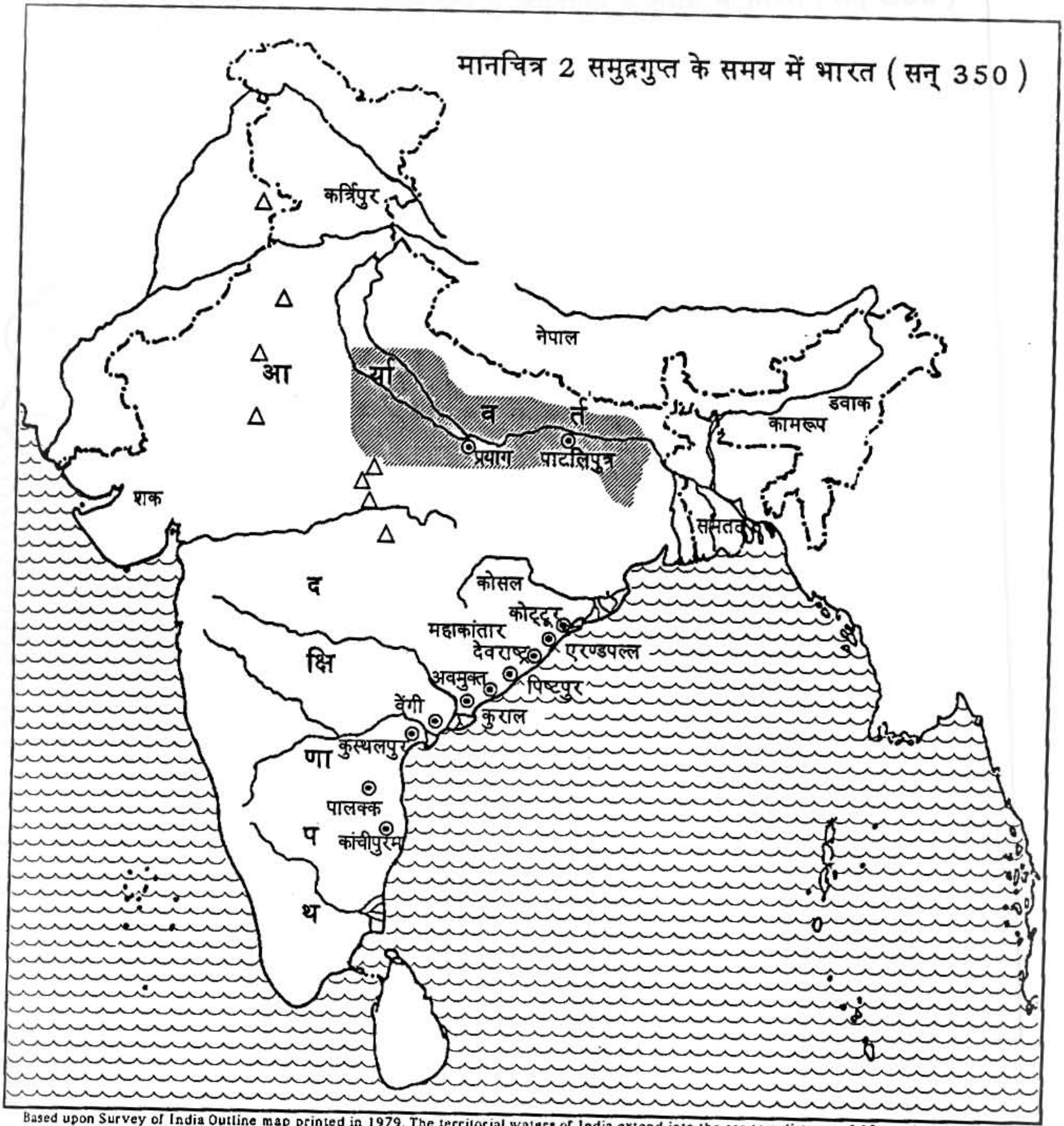

मानचित्र 2 समुद्रगुप्त के समय में भारत (सन् 350)

Based upon Survey of India Outline map printed in 1979. The territorial waters of India extend into the sea to a distance of 12 nautical miles measured from the appropriate baseline.

c. Govt of India copyright.

संकेत

(छायांकित)	समुद्रगुप्त का राज्य	⊙	शहर
△	गणसंघ	—·—	भारत की वर्तमान बाह्य सीमा

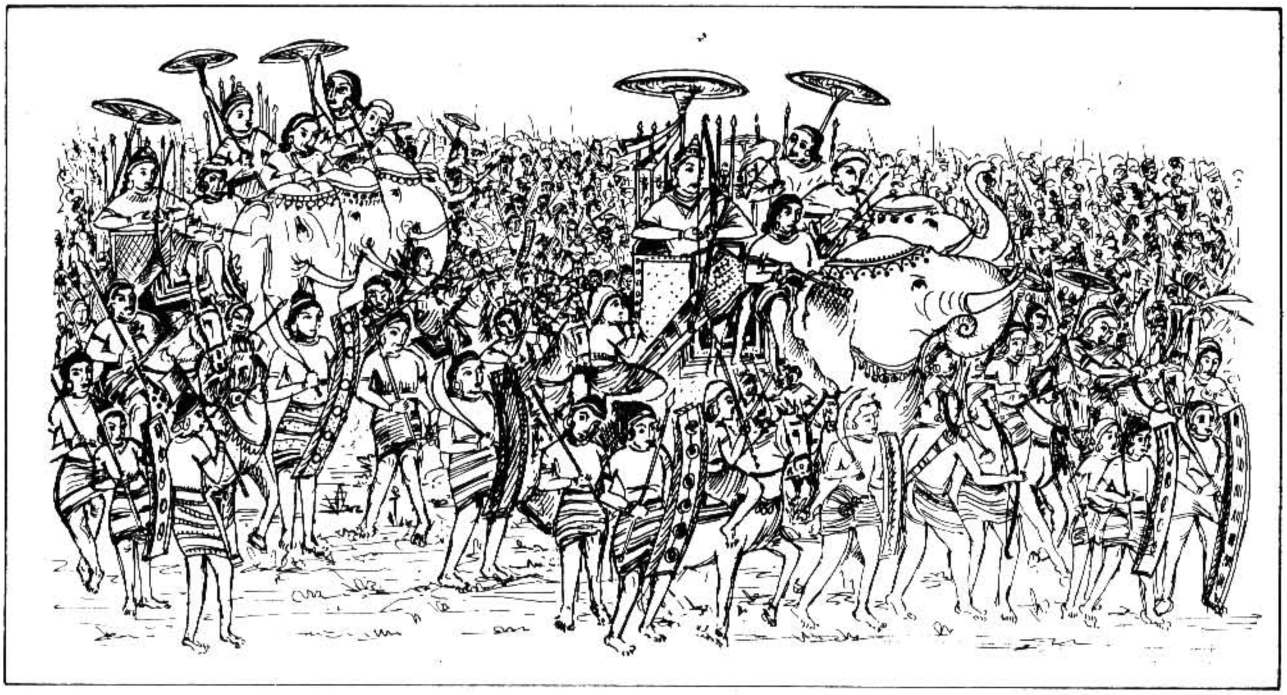

चित्र - 4 युद्ध के लिए तैयार सेना

पड़ोसी राजा और दूसरे देश के राजा

समुद्रगुप्त की विजय और सफलताओं के कारण उसका यश दूर-दूर तक फैलने लगा। वह बहुत पराक्रमी और बलवान राजा माना जाने लगा। दूसरे राजाओं पर इस बात का बहुत असर पड़ा। वे समुद्रगुप्त से बड़े प्रभावित हुए। इलाहाबाद के खम्भे पर खुदी प्रशस्ति में लिखा है-

"समुद्रगुप्त को खुश करने के लिए पड़ौसी राजा भेंट ले कर आते हैं। उसे प्रणाम करते हैं और उसकी आज्ञा का पालन करते हैं। ऐसे पड़ौसी राज्य हैं- समतट, डवाक, कामरूप, नेपाल और कर्त्रिपुर।"

इन पड़ौसी राजाओं को मानचित्र - 2 में ढूंढो।

मानचित्र-1 देखकर बताओ कि महाजनपदों के समय ये राज्य थे या नहीं।

इन राज्यों के राजा समुद्रगुप्त से युद्ध में हारे नहीं थे। फिर क्या सोच कर वे उसकी आज्ञा मानने लगे होंगे?

उस समय कई सारे गणसंघ भी थे। इन गणसंघों के लोग भी समुद्रगुप्त के लिए भेंट ले कर आने लगे। हरिषेण यह भी लिखता है कि दूर देश के राजा समुद्रगुप्त से दोस्ती करना चाहते थे, और उससे शादी ब्याह का संबंध बनाना चाहते थे।

यह सब पढ़ कर तो लगता है कि उन दिनों चारों तरफ समुद्रगुप्त का खूब रौब था, बहुत दबदबा था। पर इस बात से हमें ज़रूर सावधान होना चाहिए कि हरिषेण अपने राजा की प्रशंसा लिख रहा था तो शायद उसने कुछ बातें बढ़ा-चढ़ा कर लिखी होंगी। शायद समुद्रगुप्त का वास्तव में इतना प्रभाव न रहा हो।

अलग अलग नीतियां

पर, हरिषेण की प्रशस्ति हमें एक महत्वपूर्ण बात बताती है। हमें यह पता चलता है कि उस समय समुद्रगुप्त जैसा राजा अपने राज्य की ताकत बढ़ाने के लिए अलग-अलग नीतियों का उपयोग कर रहा था। उसने आर्यावर्त के राजाओं को हरा कर उनका राज्य अपने राज्य में मिला लिया। पर, दक्षिणापथ के राजाओं को हरा कर समुद्रगुप्त ने उनका राज्य उन्हें लौटा दिया।

इस बात का क्या तुम कोई कारण सोच सकते हो कि समुद्रगुप्त ने दक्षिणापथ के राजाओं का राज्य अपने राज्य में क्यों नहीं मिलाया?

क्या दक्षिणापथ के राज्य समुद्रगुप्त की राजधानी से ज़्यादा दूर थे?

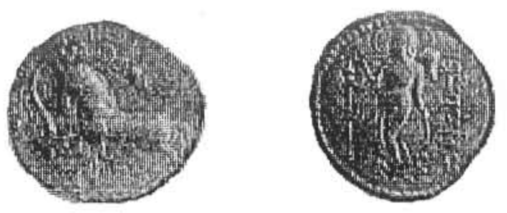

समुद्रगुप्त ने एक अश्वमेघ यज्ञ किया। तब उसने ऐसे सिक्के जारी किये

हम देखेंगे कि समुद्रगुप्त के बाद आने वाले समय में भी राजा अपनी-अपनी ताकत बढ़ाने के लिए इस नीति का बहुत उपयोग करने लगे। दूसरे राजा को हराकर उसका राज्य लौटा देने की नीति महत्वपूर्ण बन गई।

गुप्त वंश के अन्य राजा

समुद्रगुप्त के बाद गुप्त वंश में चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य, कुमारगुप्त और स्कन्दगुप्त नाम के राजा हुए। उनके शासन काल में मध्य एशिया के हूण नाम के कबीलों ने कई बार हमला किया। गुप्त राजा हूणों से कई युद्धों में लड़े। पर धीरे-धीरे उनकी ताकत कमज़ोर होती गई। सन् 550 के लगभग गुप्त वंश का शासन खत्म हो गया।

अभ्यास के प्रश्न:

1. इलाहाबाद के खम्भे का परिचय दो। यह खम्भा क्यों महत्वपूर्ण है?
2. क-मौर्य राजाओं के समय दक्षिणापथ में क्या था- कई राज्य/ कुछ गांव व बस्तियां/ कई नगर? मौर्य राजाओं ने दक्षिणापथ में क्या किया?

   ख-समुद्रगुप्त के समय दक्षिणापथ में क्या था- कई राज्य/ कुछ गांव व बस्तियां/ कई नगर? उसने दक्षिणापथ में क्या किया?
3. क-हरिषेण के अनुसार समुद्रगुप्त ने दक्षिणापथ के राजाओं के राज्य क्यों लौटा दिये थे?

   ख-क्या तुम्हें समुद्रगुप्त की इस नीति का कोई और कारण समझ में आता है?
4. समुद्रगुप्त के बारे में वो छः बातें बताओ जो तुम्हें महत्वपूर्ण लगीं।
5. समुद्रगुप्त की कौन सी नीति, उसके बाद आने वाले राजा भी अपनाने लगे थे?